



रामचरितमानस में श्रीराम का चरित्र : एक आदर्श मानव के रूप में अध्ययन

अंजू श्रीवास्तव, डिपार्टमेंट ऑफ हिंदी, यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर, राजस्थान

सारांश

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण धार्मिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक ग्रंथ है। इसमें श्रीराम के चरित्र का चित्रण एक आदर्श मानव, मर्यादा पुरुषोत्तम, आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति तथा आदर्श राजा के रूप में किया गया है। श्रीराम का जीवन त्याग, तपस्या, सत्यनिष्ठा, करुणा, धैर्य, विनम्रता, कर्तव्यपरायणता और लोककल्याण की भावना जैसे उच्च मानवीय मूल्यों का प्रतीक है। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य रामचरितमानस में वर्णित श्रीराम के चरित्र का अध्ययन एक आदर्श मानव के रूप में करना है। इसमें उनके जीवन के विभिन्न प्रसंगों, व्यवहार, निर्णयों तथा संबंधों के माध्यम से उनके नैतिक और मानवीय गुणों का विश्लेषण किया गया है। श्रीराम द्वारा पिता की आज्ञा का पालन करते हुए वनवास स्वीकार करना, विपरीत परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखना, मित्रता एवं सामाजिक समरसता को महत्व देना तथा प्रजा के कल्याण के लिए समर्पित रहना उनके आदर्श व्यक्तित्व को उजागर करता है। तुलसीदास ने श्रीराम के चरित्र के माध्यम से ऐसे जीवन-मूल्यों की स्थापना की है, जो व्यक्ति और समाज दोनों के लिए प्रेरणादायक हैं। वर्तमान समय में भी श्रीराम का चरित्र नैतिक आचरण, सामाजिक उत्तरदायित्व, मानवीय संवेदना और आदर्श जीवन की प्रेरणा प्रदान करता है। इस प्रकार, रामचरितमानस में श्रीराम का व्यक्तित्व केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं, बल्कि मानवीय आदर्शों और जीवन-मूल्यों का महत्वपूर्ण आधार भी है।